उत्तराध्ययन और धम्मपद पर हुआ प्रवचन

स्वच्छ मन से होती है सुखानुभूति – आचार्य महाश्रमण

सरदारशहर 29 मई

आचार्य महाश्रमण ने उत्तराध्ययन और धम्मपद पर तुलनात्मक प्रवचन प्रारंभ करते हुए कहा कि जीवन में मन सक्रिय भूमिका अदा करता है। मन से स्मृति, कल्पना और विचार किया जाता है। मन प्रशन्न है, स्वच्छ है पवित्र है तो सुख साथ रहता है और मन दुषित है तो दुख पीछा नहीं छोड़ता है। किसी के प्रति प्रमोद भावना व्यक्त करना मंगलकामना करना स्वच्छ मन का अंग है।

उन्होंने कहा कि क्रोध, मान, माया, लोभ मन को प्रदूषित करने वाले तत्व हैं। जो मन को अच्छा रखता है वह सफल हो जाता है। जो अच्छा और बुरा दोनों करता है व निष्फल हो जाता है और जो बुरा करता है वह दुष्फल हो जाता है। हम प्रयास करें कि हमेशा सफल हों। आचार्य महाश्रमण ने कहा कि ऋजुभूत होता है उनका हृदय शुद्ध होता है और जिसका हृदय शुद्ध होता है वह निर्माण को प्राप्त करता है।

प्रवचन से पूर्व अनेक साधु–साध्वियों एवं समणीवर्ग के द्वारा आचार्य महाश्रमण की अभ्यर्थना की गई। श्रावक–श्राविका समाज ने भी अपने भावों की अभिव्यक्ति दी। संचालन मुनि दिनेशकुमार ने किया।

शीतल बरड़िया

(मीडिया संयोजक)